

---

Shri Chandrashekhara Sarasvati SuprabhAta Ashtakam

श्रीचन्द्रशेखेन्द्रसरस्वतीसुप्रभाताष्टकम्

Document Information

---

Text title : Chandrashekharendrasarasvati Suprabhata Ashtakam

File name : chandrashekharendrasarasvatIsuprabhAtAShTakam.itx

Category : deities\_misc, gurudev, ashtaka, suprabhAta

Location : doc\_deities\_misc

Proofread by : Rajani Arjun Shankar

Latest update : September 5, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 5, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीचन्द्रशेखेन्द्रसरस्वतीसुप्रभाताष्टकम्



माया-त्रियामासु निमीलिताक्षं  
लोक-त्रियामासु विनिद्रमेनम् ।  
लोकस्य रीत्या हि निबोधयामि  
साक्षाद्गुरुं श्रीशशि-शेखरेन्द्रम् ॥

प्रातस्सरोज-कुसुमानि विहाय निद्रां  
बालारुणातप-सुवर्णमयानि नित्यम् ।  
कूजन्मराल-कल-हंसरवैः स्तुवन्ति  
श्रीचन्द्रशेखर-गुरो तव सुप्रभातम् ॥ १ ॥

भृङ्गाश्च पीत-मधु-मत्त-विलासिनीभिः  
युक्तास्सरोज-वनजात-सुरेणु-पीताः ।  
त्वां संस्तुवन्ति मधुरैः कल-गुञ्जनैः स्वैः  
श्रीचन्द्रशेखर-गुरो तव सुप्रभातम् ॥ २ ॥

एला-लवङ्ग-नवमालति-मल्लिकाद्याः  
गन्धीनि नित्यममलानि लतास्सुमानि ।  
अर्चन्ति पल्लव-करैर्विनता गृहीत्वा  
श्रीचन्द्रशेखर-गुरो तव सुप्रभातम् ॥ ३ ॥

तुभ्यं रसाल-कदली-पनसादि-वृक्षाः  
कूजद्विहङ्ग-निवहैर्मधुरं स्तुवन्तः ।  
माध्वीक-सङ्ग-मधुरं फलमुद्वहन्ति  
श्रीचन्द्रशेखर-गुरो तव सुप्रभातम् ॥ ४ ॥

कावेरि-वारि-कृत-मज्जन-पूतदेहाः  
वेदादि-मन्त्र-निवहैर्मुखरी-कृताशाः ।  
विप्रास्स्तुवन्ति सततं नत-मस्तकास्त्वां  
श्रीचन्द्रशेखर-गुरो तव सुप्रभातम् ॥ ५ ॥

भक्ताश्च ते विहित-कर्म-चया विशुद्धाः  
भक्त्यार्जिताखिल-विशिष्ट-फलैक-हस्ताः ।  
त्वद्दर्शनामघहरां परिलब्धुकामाः  
श्रीचन्द्रशेखरगुरो तव सुप्रभातम् ॥ ६ ॥


भूत्या सितेन वपुषा भुवि शैव-तत्त्वं  
शक्त्यर्पितेन मनसा वर-शाक्त-तत्त्वम् ।  
नारायणेति वदता वदनेन विष्णोः  
तत्त्वं त्वया प्रकटितं तव सुप्रभातम् ॥ ७ ॥

स्वामिन् पदाब्ज-मधुपा इव भक्त-लोकाः  
सेवां विधातुमधुना तव जागरूकाः ।  
उत्तिष्ठ पङ्कज-पदानि निधाय भूमौ  
पूर्वं वदामि विनतस्तव सुप्रभातम् ॥ ८ ॥


इत्यष्टकं शुभकरं कलि-कल्मषघ्नं  
भक्तेन केनचिद्दहो परिजल्पितं च ।  
उत्थाय जल्पति नरो विनतः प्रभाते  
सन्मङ्गलानि लभते बहुधाऽतिशीघ्रम् ॥  
इति श्रीचन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-सुप्रभाताष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Rajani Arjun Shankar

---

——  
*Shri Chandrashekhara Sarasvati SuprabhAta Ashtakam*

pdf was typeset on September 5, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

